



# पत्र-पुष्प



## निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (15-07-18)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात पिता बापदादा के अति लाडले, सदा परमात्म पालना में पलने वाली समर्थ आत्मायें, बालक सो मालिकपन के बैलेन्स द्वारा पुरुषार्थ और सेवा में सफलता प्राप्त करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - इस समय मधुबन बेहद घर की रौनक कितनी न्यारी प्यारी है। सब तरफ योग तपस्या के बहुत सुन्दर कार्यक्रम चल रहे हैं। अभी पुरानी बहिनें नवीनता सम्पन्न योग तपस्या करके खूब रिफ्रेश होकर गईं। यह जुलाई मास तो विशेष हमारी मीठी दीदी जी का मास है। दीदी ही मुझे नई आयु देकर गईं हैं। दीदी हमेशा मुझे कहती थी तुम इस टॉपिक पर जाकर भाषण करो, क्लास कराओ। दीदी का स्वयं की स्थिति पर बहुत ध्यान था। दीदी सदा कहती नया कुछ करो। दीदी का बाबा की मुरली से अति प्यार था, एक दिन भी मुरली मिस नहीं की। दीदी अमृतवेला भी बहुत पावरफुल कराती थी। बाबा, मुरली, मधुबन का मजा कैसे लेना चाहिए वह दीदी से सीखा है। आप सभी मधुबन जैसा वायुमण्डल अपने-अपने स्थानों पर भी बना सकते हो सिर्फ सोल कान्सेस रहने की भावना हो.. देही-अभिमानि स्थिति, अशरीरी स्थिति, विदेही स्थिति वायुमण्डल को पावरफुल बनाने में बहुत मदद करती है।

दीदी शरीर छोड़ने के कुछ समय पहले लण्डन आई थी, दीदी को कहते थे दीदी कुछ बोलो, तो सिर्फ एक ही शब्द कहती थी "अब घर जाना है"। तो अभी हम सबके अन्दर भी क्या है! अब घर जाना है। घर में बैठ नहीं जाना है, फिर जल्दी जल्दी नीचे आना है। घर में जायेंगे जरूर पर जल्दी नीचे सतयुग में आयेंगे। अभी हम सतयुग की स्थापना कर रहे हैं। तो जरूर हम ही वहाँ राज्य करेंगे ना! यह प्लैन अच्छा है ना। बाबा ने ऐसा एक्यूरेट पुरुषार्थ सिखाया है। दिन में सेवा करना, शाम को ज्ञान चर्चा करना और रात को जल्दी सो जाना। दादी जी कहती थी - दस करो बस। रात को 10 बजे के बाद कहाँ पर भी कोई आवाज़ न हो। यह नियम, मर्यादायें हम सबको धारण करनी है। प्यारे बाबा ने, दीदी दादी ने जो सिखाया है, जैसे चलाया है वैसे चलना है। साकार में बाबा को प्रैक्टिकल में देखा, बाबा के सामने कई बातें आईं, कई बच्चों का खेल देखा, परन्तु बाबा का ध्यान अपनी स्थिति पर बहुत था। तो हमें भी अपने ऊपर इतना ध्यान रखना है।

करनकरावनहार बाबा सेवायें तो चारों ओर खूब करा रहा है। वह तो होनी ही हैं लेकिन समय प्रमाण हम सबको अपनी सम्पन्न सम्पूर्ण स्टेज बनानी है। कभी क्यों, क्या, कैसे के प्रश्नों में उलझना नहीं है। सदा खुशी की खुराक खाते, तन्दरूस्त और खुशानुमा रहना है। भक्त लोग तो कितनी मेहनत करते हैं, प्राणायाम आदि चढ़ाते हैं, मन को अमन करते हैं। हम सबने अपने मन को सिर्फ एक बाबा की तरफ लगा दिया, बिजी कर दिया, बस। मन को दमन नहीं किया, सुमन बना दिया, इसलिए मन अभी भटकता नहीं, उसे ठिकाना मिल गया। मेहनत से छूट गये। बोलो, ऐसा ही अनुभव है ना! बाकी आप सबकी तबियत ठीक होगी। सबको खास हमारी याद देना जी।

**BK Rajesh bhai - +91 95 3355 3366**

ईश्वरीय सेवा में,  
बी.के. जानकी



# ये अव्यक्त इशारे



## “अब साक्षात्कार की लहर फैलाओ”

- 1) चारों ओर साक्षात्कार की लहर तब फैलेगी जब आप बच्चे इस साकार शरीर में, साकारी सृष्टि में रहते, सदा लाइट माइट रूप होकर रहेंगे, आपको जो कोई भी देखे वह महसूस करे कि यह कोई फरिश्ते घूम रहे हैं, लेकिन इसके लिए एकान्त में बैठ, अन्तर्मुख अवस्था में रहने का अभ्यास करो।
- 2) जब बाप और बच्चों के संस्कार समान हो जायेंगे तब आप के संस्कार देखने में नहीं आयेंगे। एक-एक में बाप को देखेंगे। आप सभी द्वारा बाप का साक्षात्कार होगा। इसके लिए स्नेही स्वरूप बनो। स्नेही बच्चे ही समान बनते हैं।
- 3) जैसे कहते हैं ना एक-एक स्टार में दुनिया है लेकिन उनमें तो कोई दुनिया नहीं है। आप धरनी के एक एक चैतन्य सितारे में जो नई राजधानी अथवा दुनिया बनी हुई है, वह अब प्रत्यक्ष रूप लेगी। जब यह प्रत्यक्षता होगी तब सभी अहो प्रभु का नारा लगायेंगे। अब यह समय नजदीक आ रहा है।
- 4) एक सेकेण्ड में निराकार, एक सेकेण्ड में साकार ऐसी ड्रिल करते रहो। अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी साकारी। जब ऐसी अवस्था हो जायेगी तब साकार रूप में हर एक को निराकार रूप का आपसे साक्षात्कार होगा।
- 5) सिर्फ सर्विस के प्लैन्स नहीं बनाओ, लेकिन अपने सम्पूर्ण संस्कारों से, अपनी सम्पूर्ण शक्ति से बाप को प्रत्यक्ष करो। भल प्लैन्स तो बनाने पड़ते हैं लेकिन प्लैन्स भी सफलता में तब आयेंगे जब प्लैन के साथ अपनी लगन पूरी हो। प्लेन याद हो, कोई भी मिक्सचैरिटी न हो।
- 6) आपका यह दिव्य नेत्र (बुद्धि का) जितना-जितना क्लीयर अर्थात् रूहानियत से सम्पन्न होगा उतना ही आपके नयनों द्वारा बापदादा और पूरी रचना के स्थूल, सूक्ष्म, मूल तीनों लोकों के चित्र दिखाई देंगे। आपके सामने कोई भी आये तो आपके नयनों को देखते ही बुद्धियोग द्वारा अनेक साक्षात्कार हों। ऐसे साक्षात्कार मूर्त तब बन सकेंगे जब सदैव साक्षी स्थिति में स्थित होंगे।
- 7) यह जो गायन है कि सभी परमात्मा के रूप हैं, यह गायन संगम पर ही प्रैक्टिकल में होता है। तुम्हारी अन्त में वह स्थिति आती है, जो सभी में साक्षात् बापदादा की मूर्त महसूस होती है। फिर सभी के मुख से यही आवाज निकलेगा यह तो साक्षात् बापदादा के मूर्त हैं। साक्षात् रूप बनने से साक्षात्कार होगा, इसको ही मिक्स करके कह देते हैं – सभी परमात्मा के रूप हैं।
- 8) अब अन्तिम पुरुषार्थ यही रह गया है। साक्षात्कार मूर्त बन

बापदादा का साक्षात्कार और अपना साक्षात्कार कराना है। आपके बोल से सभी को साक्षात् बापदादा के बोल महसूस हों। बापदादा के संस्कार सभी के संस्कारों में देखने में आयें। सभी को साक्षात्कार हो कि यह साक्षात् बापदादा बनकर ही निकले हैं।

9) जैसे शुरू में बापदादा का साक्षात्कार घर बैठे हुआ वैसे अब दूर बैठे आपकी पावरफुल वृत्ति ऐसा कार्य करे जैसे कोई हाथ से पकड़कर लाया जाता है। कैसा भी नास्तिक तमोगुणी बदला हुआ देखने में आये। अब यह सर्विस करनी है। लेकिन यह सर्विस सफलता को तब पायेगी जब वृत्ति और बातों में क्लीयर होगी। वाणी के साथ-साथ वृत्ति और दृष्टि में इतनी ताकत हो, जो किसके संस्कारों को बहुत कम समय में बदल दो।

10) साक्षात्कार मूर्त बनने के लिए अपने अनेक संस्कारों को एक शुद्ध संस्कार बना दो। कम बोल में सफलता अधिक हो। सुनना और स्वरूप बन जाना। अब वाचा मूर्ति नहीं, साक्षात्कार मूर्ति बनो, जो भी आपको देखे वह आकारी और अलंकारी देखे। ज्ञान का जो सेन्स है उसमें इसेन्स भर दो।

11) बापदादा का अपने से साक्षात्कार कराने लिये अपने को दर्पण बनाना पड़ेगा। दर्पण तब बनेंगे जब सम्पूर्ण अर्पण होंगे। सम्पूर्ण अर्पण अर्थात् स्वभाव समर्पण, देह अभिमान का समर्पण और सम्बन्धों का समर्पण। देह अर्थात् कर्मेन्द्रियों के लगाव का समर्पण। जब ऐसा समर्पण समारोह होगा तब सम्पूर्ण मूर्त का साक्षात्कार होगा।

12) जैसे सर्च लाइट द्वारा बहुत फोर्स से और अच्छी रीति लाइट फैलाते हैं – इस रीति से आपके मस्तक द्वारा लाइट का साक्षात्कार हो। नयन, मस्तक और माथे के क्राउन द्वारा जब लाइट देखेंगे तब कहेंगे यह तो फरिश्ते हैं। तुम्हारी लाइट को देख दूसरे भी लाइट हो जायेंगे। कितना भी मन में वा स्थिति में भारीपन हो लेकिन सामने आने से ही हल्का हो जायेंगे।

13) आप बच्चों की अन्तिम स्टेज है – साक्षात्कार मूर्त। जैसे अभी आप लोगों से ईश्वरीय स्नेह, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ चरित्रों का साक्षात्कार होता है। ऐसे अव्यक्ति स्थिति का भी इतना ही स्पष्ट साक्षात्कार हो। ऐसा प्लैन बनाओ जो कोई भी महसूस करे – कि यह तो चलता फिरता फरिश्ता है। साक्षात्कार मूर्त अर्थात् स्थिरमूर्त। भक्तों को स्पष्ट साक्षात्कार कराने के लिए स्थिरबुद्धि, एकटिक स्थिति आवश्यक है।

14) जैसे साकार रूप के सामने आने से हरेक को भावना अनुसार

साक्षात्कार वा अनुभव होता था। ऐसे आप लोगों द्वारा भी सेकेण्ड बाई सेकेण्ड अनेक अनुभव वा साक्षात्कार होंगे। ऐसे दर्शनीय मूर्त, साक्षात्कार मूर्त तब बनेंगे जब अव्यक्त आकृति रूप दिखायेंगे। कोई भी सामने आये तो उसे शरीर न दिखाई दे लेकिन सूक्ष्मवतन में प्रकाशमय रूप दिखाई दे। लाइट ही लाइट देखे।

15) सदैव अपना आदि स्वरूप और आदि संस्कार सामने दिखाई दे। अपनी स्मृति को पावरफुल बनाने से वृत्ति और दृष्टि स्वतः ही पावरफुल बन जायेंगी। फिर आपके दोनों नयनों से दो स्वरूप का साक्षात्कार होगा। एक निराकारी और दूसरा दिव्यगुणधारी। फरिश्ता

रूप और दैवी रूप। हरेक को ऐसा अनुभव होगा जैसे कि चलता फिरता लाइट हाउस और माइट हाउस है।

16) जैसे आजकल ट्रान्सपेरेंट चीजें अच्छी लगती हैं। वैसे अपने को भी ऐसी ट्रान्सपेरेंट स्थिति में ट्रान्सफर कर दो। ऐसे ट्रान्सपेरेंट हो जाओ जो आपके शरीर के अन्दर जो आत्मा विराजमान है वह स्पष्ट सभी को दिखाई दे। आपका आत्मिक स्वरूप उन्हीं को अपने आत्मिक स्वरूप का साक्षात्कार कराये, इसको ही कहते हैं अव्यक्ति वा आत्मिक स्थिति का अनुभव कराना।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

10-10-14

मधुबन

**“ड्रामा की नॉलेज धीरज देती है, बाप का प्यार शान्ति देता है और परिवार का प्यार दुआयें देता है” (दादी जानकी)**

आज बाबा ने आशीर्वाद लेने की बात कही, तो आशीर्वाद और दुआओं में क्या फर्क है? आशीर्वाद है बड़ों की, दुआयें हैं सबकी। मुझे तो अभी शान्ति की शक्ति चला रही है, परन्तु शक्ति है शान्त रहने की - चिन्तन नहीं करना। मुझे चिन्ता या चिन्तन करना नहीं आता है तभी चल रही हूँ। कोई कल की बात याद नहीं, सुबह की भी बात अभी याद नहीं है। बीती को चिन्तवो नहीं, आगे की न रखो आश... यह बहुत अच्छी बात है। जो बीती, आगे के लिये यह करुं न करूँ.. धीरज धर मनुआ... यह गीत बहुत अच्छा है। ड्रामा की नॉलेज धीरज देती है। बाप का प्यार शान्ति देता है और परिवार का प्यार दुआयें देता है। मैंने देखा है सारे विश्व भर के बहन भाई कितना प्यार करते हैं, दुआयें देते हैं। दुआओं भरा प्यार, ऐसे नहीं खुश करने के लिए प्यार करते हैं।

आज अभी एक का पत्र पढ़के आई हूँ थोड़ा अपसेट होने कारण तबियत बताने डॉक्टर के पास गई तो डॉ. ने कहा कुछ बीमारी नहीं है तेरे को, कोई फीलिंग आई है। फीलिंग यह आई थी कि मुझे सरेण्डर नहीं समझते हैं, उसका दुःख हुआ था तो हॉस्पिटल में गई। तो मैं आपको राय देती हूँ कि कभी भी सदा खुश रहना, राज़ी रहना, स्वयं को सदा उमंग-उल्हास में रखना - यह है अपने ऊपर दया करना। कभी भी कुछ हो जाए, कैसे होगा, मेरे से नहीं होता है ना... नहीं। अगर मेरे पास उमंग-उल्हास है, सच्ची दिल है तो सेवा भाव है। भले सेवा की भावना होवे लेकिन उमंग-उत्साह न होवे तो कदम आगे नहीं बढ़ेगा। कदम आगे बढ़ाना, कदम कदम पर कमाई है। पढ़ाई में कमाई है। इस पढ़ाई से हमारी प्रारब्ध बहुत ऊंची है। तो हमारी सबसे

ऊंची पढ़ाई कौनसी है? ड्रामा की गहरी नॉलेज, सेकेण्ड सेकेण्ड जो पास हुआ बहुत अच्छा, दूसरा जो होगा अच्छा होगा। तो सभी सदा खुश राज़ी हो, इसमें हाथ उठाओ। ऐसे ही नहीं उठाना, खुश करने के लिए नहीं उठाना। सचमुच खुश हैं क्योंकि कोई बात में नाराज़ नहीं। किसी से भी नाराज़ नहीं।

अगर मन पूरा समर्पण नहीं है तो क्या है? धन मेरे पास थोड़ा रख दिया है, किसके लिए? काहे के लिए रखा है? बाबा ने ऐसे नहीं किया है। मुझे अन्त मते खाना बाबा के घर का मिलेगा। मैं दिल से कहती हूँ, यज्ञ में जब से समर्पण हुई हूँ, मैं गैरंटी से बोलती हूँ, प्रैक्टिकल बोलती हूँ, मेरे कपड़े और खाने पर भी खर्चा कम हुआ है, पर्सनल। यज्ञ में एकाँनामी से रहना। दिल में सच्चाई, कपड़ों की सफाई और सादगी सिम्पल है। अगर सफाई न हो, सदैव सादगी भी न हो तो सच्चाई काम कैसे करेगी। सच्चाई ऑटोमेटिक काम करती है, इसके मेरे पास कई प्रूफ हैं क्योंकि हिम्मते बच्चे मदद दे बाप, सच्ची दिल से साहेब राज़ी तो क्या करेगा काज़ी। नियत साफ होगी तो सच्ची दिल है, साहेब राज़ी है इसके लिए मैं कहाँ भी रहूँ, कभी भी न्यूज़ समाचार आदि कुछ भी नहीं देखती हूँ, न सुनती हूँ। कभी देखा ही नहीं है, टी.वी. क्या होती है! क्योंकि कोई आत्मा ऐसी थी, जिसको मैंने कहा टी.वी. नहीं देखो तो कहा यह तो टी.वी. की बीमारी जैसी है वो कैसे जायेगी? इस सभा में कौन है जो टी.वी. ना देखता हो? क्या जरूरत है? बाबा कहता है बच्चों, बाबा दुआओं का भण्डार है बाबा से दुआ ले लो।

एक बारी साकार में बाबा ने मुझे कहा कि जितना तुम मुझे याद करोगी, उतना बाबा तुम्हारे साथ रहेगा। अगर मैं कहूँ कोई मेरी ग्लानि करता है, कुछ भी करता है तो जरा सी फीलिंग आई, चेहरे पर आई, यह गलत है। ऐसी गलतियाँ करते रहने से न दुआ ले सकेंगे, न दुआ दे सकेंगे इसलिए बाबा कहता है याद करो तो विकर्म विनाश हो जावें, पर यदि विकर्म बन गया तो वो विनाश कैसे होगा? कहेंगे यह पूर्व जन्मों का कोई हिसाब किताब है इसलिए किसी का कोई दोष नहीं। अभी मेरा तो कोई हिसाब-किताब नहीं, ऐसा मुझे लगता है, शरीर में आत्मा को खुशराज़ी रहना है इसलिए शरीर में बैठी है। मैं तीन बारी ओम् शान्ति किसलिए कहती हूँ, यह सारे देश विदेश में मशहूर हो गया है। मैं हूँ आत्मा, मेरा है परमात्मा। मैं शान्त स्वरूप आत्मा हूँ, मेरा स्वधर्म शान्त है। धरत परिण धर्म न छोड़िए। मुझे क्या करने का है? जैसे भगवान चलाता है वैसे चलते रहना है।

यह जीवन मरजीवा जन्म है, जीते जी मरना। जरा भी लौकिक का भान उनसे नहीं आयेगा, यह फलाने की बेटी है या बहन है या फलाना है, कोई नहीं। न नाम, न रूप, न देश... जहाँ भी होंगे कहेंगे हम तो मधुबन निवासी हैं ना। जब से बाबा ने यज्ञ की स्थापना की तब से साइंस ने भी विनाश की तैयारी करना शुरू कर दी। तभी से इन्वेन्शन होने लगा, नहीं तो यह बिजली आदि पहले नहीं थी। अभी यह माइक रखा है, यह लाइट हैं... यह सब साइंस की कमाल है। परन्तु साइंस विनाश काल नज़दीक ला रही है, तो सारी दुनिया में यह आवाज़ पहुँचना चाहिए विनाश काले निश्चय बुद्धि विजयंती, जरा भी संशय न हो, क्वेश्चन न हो। इतना अच्छा ड्रामा का स्पष्ट ज्ञान होते भी कोई प्रकार का क्यों, क्या, कैसे होगा... मुख ऐसे बोले, अभी यह अच्छा नहीं लगता है, शोभा नहीं देता है। इसमें तुम्हारा क्या जाता, तुमको जो करना है सो कर ले। यह सेल्फिश नहीं हैं पर सच्ची दिल है। जो पुरुषार्थ

करेंगे ऑटोमेटिकली दूसरे को ऐसा पुरुषार्थ करने का दिल से उमंग आयेगा। गोप-गोपियों (पुरुषार्थियों) को खुशी न हो, तो मज़ा नहीं है। बाबा को फॉलो करना, बाबा जैसे सिखाता है, न किसी को दुःख दो न लो। कभी भी दुःख न लो।

अपनी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति.. जैसा अन्दर सिमरण होता है, वैसी वृत्ति होती है, वैसी दृष्टि होती है। कितना सुख मिलता है, बाबा गोद बिठाके, गले लगाके पलकों पर बिठाके ले जा रहा है। पहले ऐसी दृष्टि देने लेने का ज्ञान नहीं था, पर शान्ति बाबा में ऐसी थी, एकदम आत्मा शान्त हो जाती थी याद में। बाबा शान्ति का सागर है, शान्तिधाम में जाना है। अभी अभी जाना है, उसके लिए हम तैयार बैठे हैं। दीदी को कुछ भी बोलते तो कहती थी, अब घर जाना है, अब घर जाना है। तो जो शब्द हमारे दीदी-दादियों के रहे हैं, वही अभी हमारे भी हों। हम रचना को जानते हैं, कैसे रचना रची है, सिरखपाऊ की बात नहीं है, पर तू अपनी कर, अपनी घोट तो नशा चढ़े।

क्या होगा! अच्छा ही होगा क्योंकि खाने पर या नहाने पर, यहाँ वा कहाँ भी हैं, बाबा की याद में शान्ति से करना चाहिए। बाबा जब स्नान करता था तो कहता था शिवबाबा को मैं स्नान करा रहा हूँ या मेरे को वो करा रहा है! मेरा दिल करता था मैं बाबा के ऊपर पानी का लोटा चढ़ाती रहूँ। बाबा की स्नान करने की बाल्टी भी बहुत अच्छी होती थी। जो बाल्टी साफ करने वाला था उसको भी नशा था, कहता था बाबा स्नान करने आयेगा। तो स्नान करते भी बाबा की याद आये, कुछ खाते याद आये।

अच्छा, अभी सभी खुश हो गये। अभी सदा खुशराज़ी रहने के लिए कौन-सी बातें मन में चिन्त में होनी चाहिए, तो सदा ही सत् चिन्त आनंद स्वरूप रहें। चिन्त में कोई बात नहीं है तो आनंद स्वरूप हैं, ऐसी स्थिति हो। बोलो सभी मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा, थैंक्यू, ओम् शान्ति।

## दूसरा क्लास

**“कर्म वह करो जो प्रभु पसन्द हो, याद में स्नेह हो तो सकाश मिलती रहेगी”**

वन्दरफुल बाबा की वन्दरफुल रचना को देखें या सामने लक्ष्मी-नारायण को देखें, पीछे मम्मा बाबा और यहाँ आप सब.. तो किसको देखें? सब कहेंगे मेरी माँ मेरा बाबा। सारी विश्व में जो सबका बाबा है वो मेरा बाबा है। कल बाबा आ रहा है तो हमारी स्थिति कैसी हो? एक बाबा को याद करो तो बाबा की दस बातें याद आती हैं। जो मुरली में कहा वो मैंने पढ़ा या सुना परन्तु जीवन

में लाया! चक्कर के ज्ञान से संगमयुग का महत्व बहुत है। एक सेकण्ड चक्कर को याद करो, सामने रखो। चक्कर में हमारा कैसा पार्ट है फिर झाड़ को देखो, अन्दर फाउण्डेशन में आदि सनातन धर्म वाली आत्मा हूँ। आदि सनातन धर्म सत् धर्म और उसमें श्रेष्ठ कर्म है इसमें हर एक अपने को देखे कि कर्म से ऐसा दिखाई पड़ती है?

आज की मुरली में बाबा ने कहा बाबा सन्यास नहीं कराता है वो निवृत्ति मार्ग है, हमारा प्रवृत्ति मार्ग है और गैरन्टी है अभी हमको घर जाना है। फिर सतयुग में आना है। जैसे छोटे हॉल में जाओ तो लक्ष्मी-नारायण को सामने देखते, लक्ष्य याद आ जाता कि यह बनना है। याद करो शिवबाबा को, शिवबाबा याद तभी आयेगा जब लक्ष्मी-नारायण का लक्ष्य स्वरूप में आयेगा, प्रैक्टिकल लाइफ में आयेगा। तो करनी इतनी श्रेष्ठ हो। बाबा जब चलता था तो आवाज़ भी नहीं होने देता था। इतना ध्यान रखता था, नारायणी नशे में रहने का। ऐसे बाबा से कल हम सब मिलन मनायेंगे क्योंकि अगर ईश्वरीय स्नेह में सम्पन्न बनना है, फिर याद में स्नेह है तो उसमें सकाश मिलती है।

किसी ने मेरे को कहा तुम बहुत दयावान हो, मैंने कहा दुआयें बहुत मिलती हैं। दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान... समझ गये। अभिमान थोड़ा भी इतना भी है तो श्रेष्ठ कर्म करने में कोई न कोई विघ्न आयेंगे। एक हैं विघ्न-विनाशक, दूसरे विघ्न डालने वाले, तीसरे विघ्नों से घबराने वाले इसलिए केयरलेस न हो। तो संकल्प भी हमारा अलबेलाई वाला न हो। सदैव उमंग-उत्साह बना रहे, तो जो कोई कार्य है, इतना साल हो गया, कार्य कराने वाले के पास वो हूबहू कल्प पहले वाला है। कल्प वाली बात सेम है परन्तु संगम पर अभी-अभी हमारे सामने रोज़ कितनी अच्छी-अच्छी बातें दिखाई पड़ती हैं।

कमाल है बाबा के सकाश की, एक है बाबा का स्नेह, दूसरा योग में बाबा खींचता है क्योंकि बाबा की दया है हमारे ऊपर, तभी कहता है याद करो ना, तो तुमने जो गलतियां की हैं वो माफ कर दूंगा। भगवान से माफी नहीं भी मांगेंगे पर रियलाइज़ होगा कि आगे चलकर मेरे से ऐसे कोई कर्म नहीं होंगे जो प्रभु पसंद नहीं हो। कर्म वो करुं जो प्रभु को पसन्द हो। अभी प्रभु कहाँ! तुम कहाँ! यह कोई हलवा खाने की बात है क्या? कौन है जिसको यह लगन है कि मुझे काम वो करना है जो बाबा को अच्छा लगता है। दिल को भी प्रभु पसंद चाहिए। किसके भी दिल को पसंद करने के लिए थोड़ा सच न बोलूँ! परन्तु ऐसा समय फिर से नहीं मिलेगा इसलिए सच्चा बनना हो तो अभी बन जाओ। इतने सच्चे बनो, जो दुनिया का भी झूठ खत्म हो जाये, इतना बाबा ने सच्चा बनाया है। बाबा सुना रहा है, मेरे कान सुन रहे हैं, आँखों से देख रहे हैं। अभी यह जो भी बातें सुना रही हूँ, वो सब प्रैक्टिकल में हों तभी यह चेहरा चमकेगा।

बाबा का बनने के बाद मन वाणी कर्म तीनों ऐसे हों जैसे बाप के हैं। विचित्र बाप इस चित्र में अगर नहीं आता तो हम विचित्र को कैसे याद करते। विचित्र जिसका कोई चित्र नहीं है, परन्तु वो ब्रह्माबाबा की यहाँ भ्रुकुटी के बीच में आके बैठ गया। तो हम लोगों ने हंसी में कहा यहाँ कहाँ बैठा है आपके पास, ऐसे बाबा को

पूछा तो बाबा ने कहा बड़ा होता तो यहाँ गोला हो जाता। वो तो बहुत छोटा है। पूजा करने के लिए बड़ा बनाया है, बाकी है बहुत छोटा जो यहाँ भ्रुकुटी के बीच में चमकता है अजब सितारा, ऐसे चमकते हुए बाबा को देखो, हमारा भी सितारा चमकता है। अभी तो ज्ञान बहुत बड़ा देना होता है क्योंकि आप बुद्धिवान कैच करो ना, यह ज्ञान कौन दे रहा है, कैसा है? शुरू में बाबा कहता था जो तुम्हारे को देखे लाइट माइट का अनुभव करे और जो संग में आवे एवरीथिंग राइट हो क्योंकि भगवान का बच्चा हूँ।

कोई भी यह कह नहीं सकता कि साकार को नहीं देखा। यहाँ कोई बैठा है जिसने बाबा को साकार में देखा है! पर अभी साकार चाहे अव्यक्त मुरलियां ऐसी चलती हैं, तो अव्यक्त बाबा ने क्या क्या सुनाया, कैसे वन्दरफुल है। गुल्जार दादी के द्वारा ऐसी जो अव्यक्त पालना मिली है, जो बुद्धियोग बल, बुद्धि मन को एकदम लगाव झुकाव से फ्री कर देता है। एक बाप, दूसरा हमको भी कोई यह देह दिखाई नहीं पड़ती है। दिल से अपने मीठे मीठे बाबा के बच्चों के लिये मुझे प्यार बहुत है। आई लव यू, यह मुख से न भी बोलें पर चेहरा बताता है। ऐसे ही मुफ्त में नहीं कहते हैं। भासना आती है क्योंकि भावना यह है, जैसे पाँच तत्वों का शरीर है तभी आत्मा इसमें प्रवेश है, जीवात्मा है। ऐसे पाँच ऐसी बातें हमारे लाइफ के अन्दर धारणा में हों माना लाइफ में हो। बाबा कहता है कैरेक्टर पर ध्यान रखो। दूसरों की करेक्शन करने के लिए टाइम है ही नहीं। मैं बैठके यह देखूँ, सोचूँ इसको यह नहीं करना चाहिए, यह नहीं करना चाहिए, अच्छा करेंगे, उसमें हाथ ऐसा हो। अपने लिये पहले चेक करो मुझे क्या चेंज करना है, जो बाबा नज़र आये।

कोई भी कारण हो अभी हमको अशुद्ध संकल्प नहीं आ सकता है, नहीं आना चाहिए। सूक्ष्म मोह, लोभ अटैक करता है तो कहेंगे फलाने के साथ काम पड़ता है इसलिए रिगार्ड देना पड़ता है, पर यह भी सच्चाई नहीं है। तो सिर्फ सच्चे रहो तो स्वमान में रह सबको सम्मान दे सकेंगे। बड़ी दादी की यह नेचुरल नेचर थी। तो अपने जीवन को सैम्पल बनाके रखो, कुछ मेहनत नहीं। किसी किसी को मैं कान में इशारा देती हूँ, किसको लगता है यह अपनी बात करती है। बोलने की भी जरूरत नहीं है, पर अगर किसी को अच्छा लगे ना तो मुझे खुशी होगी क्योंकि नहीं करेंगे तो समय थोड़ा है।

तो जो बातें थोड़ा अलबेलाई या सुस्ती या कोई भी बात, स्थिति बनाने में विघ्न डालती हो तो आज उस विघ्न को खत्म करो। कोई छोटा सा भी विघ्न हो उसे खत्म कर सदा निर्विघ्न स्थिति हो। ऐसा कोई व्यर्थ ख्याल ही न आये, आत्मा बाबा से प्यार, सकाश, स्नेह खींच लेवे। अच्छा।

# “कर्म में मालिकपन की स्मृति रहे तो विदेही स्थिति का अनुभव सहज कर सकेंगे”

(गुल्जार दादी जी)

बाबा ने कहा है बच्चे लाइट हाउस बनो। तो लाइट हाउस का काम क्या होता है? चारों ओर रोशनी देना। इस समय दुनिया के आत्माओं की यही इच्छा है कि सदा सुखी रहें, सदा शान्त रहें। साधारण अशान्ति से शान्ति तो सब लोग समझते हैं लेकिन हम लोगों की स्थिति ऐसी होनी चाहिए जो मन निगेटिव या व्यर्थ संकल्पों में भी नहीं जायें। इससे किनारा होगा तो हमारे बेस्ट, शुभ संकल्प होंगे। फिर उन समर्थ संकल्पों का वायब्रेशन स्वतः जाता है।

बाबा जब आते हैं तो वायब्रेशन अच्छे लगते हैं, क्यों? क्योंकि वह सागर है। ज्ञान का, सब शक्तियों का सागर है उसका वायुमण्डल चारों ओर फैल जाता है। तो ऐसे हम सबको भी लाइट हाउस होकर वायुमण्डल फैलाना है। वह हृद की रोशनी फैलाने वाला लाइट-हाउस तो कॉमन है। लेकिन हम हैं रूहानी लाइट हाउस। शक्ति, शान्ति और खुशी की लाइट देने वाले लाइट हाउस हैं। लेकिन रूहानी लाइट हाउस वही बन सकता है जिसमें सब शक्तियों का स्टॉक हो। अगर खुद में ही नहीं होगा तो दूसरों को कैसे देगा? और लाइट हाउस की लाइट तो पावरफुल होती है। तो इतनी शक्तियाँ जमा करके लाइट हाउस बनके वायुमण्डल को परिवर्तन करना है। विश्व परिवर्तन की बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। तो बाबा ने यह जो जिम्मेवारी दी है, वह हमको अवश्य निभानी चाहिए। कई समझते हैं हम तो बहुत बिजी रहते हैं इसलिए पावरफुल योग नहीं हो सकता है। विदेही बनना, अशरीरी बनना या कर्मातीत बनना - यह तो बहुत ऊंची मंजिल है। इसके लिए अगर हम अभी से तैयारी करें तो लास्ट में हमको यह तैयारी मदद देगी।

विदेही माना यह नहीं कि देह से एकदम न्यारे हो जायें फिर तो शरीर छूट जायेगा। विदेही का अर्थ ही है कि कोई भी देह की कर्मेन्द्रियाँ चाहे सुनने वाली, चाहे देखने वाली, चाहे सोचने वाली यह कोई भी मुख्य कर्मेन्द्रियाँ हमको देह-भान में नहीं लाये अर्थात् देह की कोई भी कर्मेन्द्रियाँ हमको अपनी तरफ आकर्षित नहीं करे। कई बार कोई कोई बात से कनेक्शन नहीं होता तो भी आदत होती है - देखेंगे, सुनेंगे...। तो यह समझो हमारी देखने की कर्मेन्द्रियाँ जो हैं वह लूज़ हैं। वश में नहीं हैं क्योंकि देखेंगे तो सोच भी चलेगा कि कौन आया, देखने की आंख भी धोखा दे रही है और सोच भी चल रहा है कि इस समय क्यों आया, कैसे आया तो हमारी कितनी शक्तियाँ व्यर्थ गईं। ऐसे हर एक में कोई ना कोई नेचर होती है। कोई को सुनने की, कोई को देखने की इच्छा

बहुत होगी। कोई को कोई मतलब ही नहीं होगा तो भी सोचने की आदत होगी। छोटी सी बात पर भी सोच बहुत चलेगा, यानि सोचने की शक्ति, मन पर कंट्रोल नहीं है। आंख के ऊपर कंट्रोल नहीं है। कान के ऊपर कंट्रोल नहीं है और किसकी फिर बोलने की आदत होती। दो की बात चल रही होगी, वह वहाँ भी जरूर बीच में बोलेगा। रह नहीं सकेगा कोई कनेक्शन ही नहीं है फिर वह भी बोलेगा जरूर। कोई ना कोई विशेष कर्मेन्द्रियाँ जो होती हैं वह खींचती हैं, तो हर एक को अपनी चेकिंग करना चाहिए कि बहुत करके कौनसी कर्मेन्द्रियाँ मेरे कंट्रोल में नहीं हैं? जो अपने कंट्रोल में नहीं हैं वही अन्त में धोखा देगी क्योंकि अन्त में सभी बातें देखने, सुनने, सोचने की होंगी। बोलने के लिए तो उस समय, समय नहीं होगा, लेकिन अन्दर बोलेगा जरूर।

तो विदेही तब बन सकेंगे जब यह सब कर्मेन्द्रियाँ कंट्रोल में हों। इस देह की कर्मेन्द्रियाँ मेरे को क्यों खींचती है? क्योंकि कंट्रोलिंग पावर नहीं है तो फिर विदेही कैसे बनेंगे? देह से न्यारा माना देह से कोई अलग तो नहीं हो जायेंगे। लेकिन कोई भी देह की कर्मेन्द्रियाँ हमको अपने तरफ खींचे नहीं, यह प्रैक्टिस जरूर चाहिए। नहीं तो अन्त में जब हालतें बहुत खराब होंगी, उस समय कंट्रोलिंग पावर अगर नहीं होगी तो कभी भी पास विद ऑनर नहीं हो सकते हैं। और बाबा तो कहते हैं कि अन्त में तो एक सेकेण्ड का पेपर होगा - स्मृतिलब्धः, नष्टोमोहा। कर्मेन्द्रियों से सुनने, देखने, बोलने और सोचने का भी तो मोह होता है। उसे भी तो बॉडी-कान्सेस का ही एक हिस्सा कहेंगे। नष्टोमोहा माना सम्बन्धियों या वैभवों से, चीजों से जरा भी मोह नहीं। अपने शरीर की कोई भी कर्मेन्द्रियाँ अगर खींचती हैं माना मोह है, उससे प्यार है। तो नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप कैसे होंगे? तो इसके लिए एक सहज अभ्यास है कि हम चाहे कितने भी बिजी रहते हैं लेकिन मैं आत्मा मालिक इन कर्मेन्द्रियों से यह काम करा रही हूँ। जैसे कोई डायरेक्टर, बॉस होता है - वह अपने ही कमरे में एक कुर्सी पर बैठा रहता है। परन्तु उसको यह नैचुरल याद रहता है कि मैं डायरेक्टर हूँ, यह कर्मचारी जो भी मेरे साथी हैं उनसे कराने वाला हूँ। मैं जिम्मेवार हूँ। यह तो याद रहता है ना! ऐसे यह भी याद रहे कि मैं आत्मा करावनहार हूँ और यह कर्मेन्द्रियाँ जो हैं, मेरी कर्मचारी हैं यानि साथी हैं। मददगार तो यह कर्मेन्द्रियाँ ही हैं। लेकिन मैं मालिक हूँ, कराने वाला हूँ। मालिक कहने से आत्मा अलग हो जाती है, शरीर अलग हो जाता है। यह प्रैक्टिस हम बीच-बीच में काम करते भी करें, यह नशा रखें कि मैं आत्मा

करावनहार हूँ या मैं आत्मा मालिक हूँ। मालिकपन आयेगा तो न्यारापन आटोमेटिक होगा। कराने वाला मैं हूँ और यह करने वाली हैं तो डायरेक्शन से जरूर चलेंगे। अगर कोई डायरेक्शन प्रमाण नहीं चलते हैं तो समझेंगे कि यह तो नहीं चल सकेगा। तो कर्म छोड़कर नहीं लेकिन कर्म करते हुए यह याद करना है कि मैं कराने वाली आत्मा मालिक हूँ, यह कर्मन्द्रियाँ अलग हैं, फिर कन्ट्रोल करना सहज है। यदि मालिक को मालिकपन ही याद नहीं होगा तो सर्वेन्ट मानेगा कैसे! कम्पनी के डायरेक्टर जो होते हैं वह अपने वर्कर्स को कितना बिजी रखने की कोशिश करते हैं, तो मैं भी मालिक हूँ तो इन कर्मन्द्रियों को क्यों नहीं बिजी रखूँ। दूसरा मैं मालिक हूँ तो विदेही यानि देह से न्यारे का अभ्यास नैचुरल होता जाता है! कर्म करते हुए यह अभ्यास करते रहो तो आपका लिंक जुटा रहेगा। और लिंक जुटा हुआ होने के कारण फिर जब आपको फुर्सत मिलती है उस समय आप विदेही बन जाओ। लेकिन विदेही का मतलब यह नहीं है कि चींटी ऊपर चढ़े तो पता ही नहीं पड़े। लेकिन जैसे कोई बहुत डीप विचार में होते हैं, कोई बात में बहुत रूचि होती है, सुनने की, देखने की तो उस समय बाहर कुछ भी होता रहे फिर भी हमारा अटेंशन नहीं जाता है। समझो मैं खाना खा रही हूँ और मेरा कुछ विचार चल रहा है, जिसमें मेरा पूरा ध्यान उसी विचार में है तो खाना तो मैं मुख में ही डाल रही हूँ, लेकिन अगर कोई मेरे से पूछे कि आज नमक ठीक है? तो आप जवाब नहीं दे सकेंगे क्योंकि आपका विचार जो है वह दूसरे तरफ इतना डीप था जो आपने खाया भी लेकिन खाते

हुए भी आप न्यारे रहे। तो जब देह में होते आपको पता ही नहीं पड़ा कि मीठा है, खट्टा है। ऐसे ही अगर हम देह में होते हुए अपने ही मनन चिंतन में हैं, मालिकपने के नशे में हैं तो मुझे यह कर्मन्द्रियाँ क्यों आकर्षित करेंगी? नहीं कर सकती हैं। यह अभ्यास बहुत सहज है क्योंकि इसमें काम को छोड़ने की बात नहीं है। काम करते हुए मालिकपन चाहिए। तो कर्म भी अच्छा होगा और विदेहीपन का अभ्यास भी पक्का होता जायेगा।

एकान्त में इसका अभ्यास और अच्छी तरह कर सकते हैं। एकान्त में मालिकपने के नशे का मजा तो कुछ और ही होता है। भिन्न-भिन्न स्वमान का नशा और खुशी रहे तो भी मालिकपने की स्मृति और पक्की होती जायेगी। और इससे याद आटोमेटिकली आ जायेगी क्योंकि जितना आप मालिकपन में रहेंगे तो कर्मन्द्रियाँ धोखा नहीं देंगी। और मैं आत्मा हूँ, यह पक्का होता जायेगा। मालिक हूँ, आत्मा हूँ। तो शिवबाबा की याद बहुत सहज हो जायेगी क्योंकि मैं भी अशरीरी वह भी अशरीरी। बीच में पर्दा है यह शरीर का इसलिए योग नहीं लगता है। और जब मैं आत्मा मालिक अशरीरी हूँ और बाबा भी अशरीरी है तो एक जैसे हो गये। तो कनेक्शन बहुत जल्दी हो जायेगा यानि योग जल्दी लग जायेगा। तो यह अभ्यास जरूर करो। जब देह से अलग होते जायेंगे, होते जायेंगे तो वैराग्य क्या बड़ी बात है। मालिकपने के नशे और खुशी के रस के आगे यह जो भी लगाव की चीजें हैं वह ऐसे लगेंगी जैसे बिल्कुल फीकी हैं, कुछ भी नहीं हैं। और अलग-अलग मेहनत करने से बच जायेंगे। अच्छा।

## दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

**ज्ञानी तू आत्मा का पहला-पहला गुण है - सहनशीलता (कुमारों प्रति दादी जी का क्लास)**

बाबा हम बच्चों को यह बहुत बड़ा लेसन देते कि हे बच्चे इस ज्ञान की मंजिल पर चलेंगे तो सहन करने की शक्ति धारण करनी पड़ेगी। सहनशील बनने की थोड़ी तकलीफ लेनी पड़ेगी। यह सहनशीलता का गुण बहुत बड़ी शक्ति है, यह सर्व गुणों में महान गुण है। यह बाबा का बोल सुन सब प्रैक्टिकल चार्ट देखें कि मेरे में सहनशीलता का गुण वा शक्ति है?

बाबा ने कहा बच्चे दुःख-सुख, स्तुति-निंदा, मान-अपमान सबमें समान रहने की, एकरस स्थिति में रहने की, सहनशील होने की शक्ति चाहिए। तो यह शक्ति चाहिए या मुझ आत्मा का अथवा इस ज्ञान का पहला-पहला गुण ही यह है। ज्ञानी तू आत्मा का गुण है - समान रहना। अगर ज्ञानी तू आत्मा में यह गुण नहीं तो वह प्रिय नहीं। जब हम अपने को ज्ञानी तू आत्मा कहते माना हमारे अन्दर ड्रामा की सारी नॉलेज है। हर आत्मा के सतोप्रधान,

सतो, रजो, तमो की स्टेजेस की भी नॉलेज है। जब नॉलेज है तो नॉलेज की शक्ति के आधार पर समान रहने की शक्ति स्वतः ही आ जाती है।

जैसे बाल से युवा, युवा से वृद्ध होते तो कभी यह नहीं कहते कि ओ नेचर तूने बाल से युवा वा युवा से बूढ़ा क्यों बनाया? परन्तु जानते हैं यह प्रकृति का नियम है। चार ऋतुयें होना यह भी प्रकृति का नियम है। जब हम जानते हैं कि यह नियम है, तो हम क्यों कहें ओ प्रकृति तुम हमें ठण्डी में वा गर्मी में दुःख क्यों देती! हम जानते हैं यह नेचर का गुण है। सर्दी के समय सर्दी, गर्मी के समय गर्मी होनी ही है। हमारे पास उससे बचने के साधन हैं तो उसे यूज करें। हम जान गये अभी की प्रकृति है ही तमोप्रधान। सतयुग में प्रकृति सतोप्रधान है इसलिए सुखदाई है। अभी तमोप्रधान है इसलिए प्रकृति पर कभी गुस्सा नहीं आता। कभी भी हम ऐसे नहीं लड़ते -

ए सदीं तू मुझे दुःख क्यों देती? किससे लड़ेगे? जब बुद्धि में आता यह तो प्रकृति का धर्म है तो उससे लड़ने नहीं जाते। फिर जब कहते क्या करें यह पारिवारिक परिस्थितियां आती हैं। वह तो आयेंगी ही। मैं उससे दुःखी क्यों हूँ! जैसे प्रकृति का दुःख सुख सहन करते, वैसे यह परिवार का भी तो हिसाब-किताब है। मैं उसमें क्यों लड़ूँ! हमें उसमें अपनी स्थिति अप-डाउन नहीं करनी है।

कभी-कभी सोचते मुझे तो सबसे मान मिलना चाहिए। ये मुझे मान नहीं देता इसलिए गुस्सा आता। लेकिन जब प्रकृति दुःख देती तो गुस्सा क्यों नहीं आता। जब मेरा कोई अपमान करता तो मैं रंज होती लेकिन मैं सोचूँ कि मैंने उसे कितना मान दिया है। एक है देना, एक है लेना। जब अपमान पर गुस्सा आता माना मैं मान की भूखी, प्यासी हूँ। मान की मांग है। मैं दाता बनूँ या लेवता बनूँ? मुझे मान देना है या लेना है? मैं वरदाता हूँ या आत्माओं से वर लेने वाली हूँ? मान मांगना अर्थात् आत्माओं से वर मांगना। बाबा कहता मांगने से मरना भला... मैं दाता की बच्ची दाता हूँ तो लेवता क्यों बनते! यह सवाल हरेक अपने से पूछे।

कहा जाता तू प्यार करो तो सब करें। कहते मैं तो सबको प्यार देता लेकिन आगे वाला मुझे ठुकराता। इसमें हमेशा समझो यह मेरा हिसाब-किताब है। 63 जन्मों का हिसाब-किताब चुक्त् करना है। जहाँ प्यार होगा वहाँ सब मान देंगे। शुभ भावना रहेगी, शुभ चिन्तन चलेगा फिर उनके लिए मेरा वरदान रहेगा। अगर मैं इस स्थिति पर रहूँगी तो सब मेरी स्तुति करेंगे। अगर मैं ही अपनी स्थिति पर नहीं रहती तो कोई मेरी क्या स्तुति करेगा।

हरेक अपने से पूछो - पहले मेरी स्तुति मेरे 10 मंत्री (कर्मन्द्रियां) करते? जो मुझ आत्मा का संस्कार है वह संस्कार मेरी स्तुति करता? जब मेरा संस्कार मेरी स्तुति करे अर्थात् आर्डर में रहे तब दूसरे भी स्तुति करेंगे। बाबा ने कहा 3 मंत्री हैं मुख्य। मन बुद्धि और संस्कार। तो मेरा मन सदा मेरे चरणों में रहता अर्थात् मैं जो पवित्र आत्मा हूँ, मेरा मन सदा ऐसा ही स्वच्छ पवित्र और सदा ऊंचा रहता? मेरा पहला मंत्री मेरे आर्डर में है? आर्डर में है तो शुद्ध संकल्प स्वतः रहेंगे। फिर यह क्यों आता मेरा यहाँ अपमान हुआ? यह संकल्प उठाना भी तो अशुद्धता है। अपने से पूछो मैं अपनी महानता की ऊंची स्थिति पर रहता? जब मैं उसी स्थिति पर रहूँगी तब सभी मेरा मान करेंगे। कई कहते हैं मेरी वृत्ति अच्छी नहीं, मेरी वृत्ति चंचल होती है, अगर मैं यही रिपोर्ट करती तो मैं दूसरे से क्या मान माँगूँ। पहले तो अपनी रिपोर्ट बन्द करो। तू पहले अपने मन्त्री से तो प्यार पाओ, पीछे दूसरे से मांगो। अगर वृत्ति चंचल है माना मन्त्री कन्ट्रोल में नहीं है।

कहते हैं दक्ष प्रजापिता ने यज्ञ रचा। अब दस शीश वाले रावण को स्वाहा करने के लिए हमारे बाबा ने यह रुद्र यज्ञ रचा है।

इसमें ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बच्चों ने अपना सब कुछ स्वाहा कर दिया। तो हरेक पूछे मैंने अपने दस राक्षसों को स्वाहा किया है? इन्द्रिय जीत बनने का मतलब है अपनी कर्मन्द्रियों को दिव्य बनाना। तो चेक करो कि मेरे कान दिव्य बने हैं? या अभी तक कनरस सुनने का शौक है? परचिन्तन पतन की ओर ले जायेगा। फिर ऐसा परचिन्तन वाला मान पा सकता है? हमारे यह नयन दूसरे को प्यार की भावना से, भाई-भाई की दृष्टि से, बाबा के रत्न देखने के लिए हैं, अगर यह नयन बुरी दृष्टि से देखते, द्वेष की दृष्टि से देखते तो क्या यह नयन मुझे मान देंगे! अगर नयनों ने बुरी नज़र से देखा, द्वेष दृष्टि डाली तो मेरे नयन ही मुझे अपमानित करते। दुःख देते फिर दूसरे से मान कैसे मिलेगा।

कहते यह मुझे इतना प्यार नहीं देता। मैं पूछती तुमने अपने को कितना प्यार किया? मैं अपने संकल्प को शुद्ध रखूँगी तो प्यार मिलेगा। मेरी बुद्धि अगर परचिन्तन में घूमती, सत्यता को छोड़, स्वच्छता को छोड़ असत्यता की ओर जा रही है तो पहले मेरी बुद्धि ने ही मुझे प्यार नहीं दिया। अगर बुद्धि ही प्यार नहीं करती तो दूसरे क्या करेंगे! पहले देखो - मेरे संस्कार मुझे रिस्पेक्ट देते हैं? मैंने अपने संस्कारों की चंचलता को स्वाहा किया है? अगर मेरे संस्कार ही मुझे रिस्पेक्ट नहीं देते तो दूसरे क्या देंगे!

जिसमें जरा भी मूड आफ की आदत है, उसे मान मिल नहीं सकता। मूड आफ माना आफ। उसे कौन सी प्रेम की आफर मिलेगी! उसे कौन आफरीन देगा? अगर कहते आफ होने की आदत है, तो आदत शब्द ही बुरा है। दिव्यता माना गुण। मेरा गुण है, दिव्य रहना। जहाँ दिव्यता है वहाँ मान अपमान का सवाल समाप्त हो जाता। जहाँ मांगते हो कि मान मिले, वहाँ वह दूर हो जाता है। आज के राजनेतायें मान के लिए चेयर मांगते, आज मिलती कल चेयर उठाकर फेंक देते क्योंकि है ही प्रजातन्त्र। हम तो राजाओं के राजा हैं, हम कभी मांग नहीं सकते। राजा कभी नहीं कह सकता कि यह चपरासी मेरी इज्जत गंवाता है। राजा का तो आर्डर चलता। तो पूछो मैं राज्य-अधिकारी हूँ या मैं अपने चपरासियों के अधीन हूँ?

कई कहते हैं क्या करूँ - गुस्से में हाथ चल गया। अरे चल गया या तूने चलाया? कहते हैं न चाहते भी गाली निकल गई। अरे मुख किसका गंदा हुआ! जिसने गाली दी उसका मुख बासी हुआ। तू बासी मुख वाले को मुंह क्यों देते! तुम उनसे मुख मोड़ लो। तुम उनके साथ गंदा क्यों बनते हो!

दिलाराम बाप के दिलाराम बच्चे बनो। बाबा ने तो कहा है तुम शरीर निर्वाह के लिए कर्म करो। बाकी बाबा ने चित्र देखने की, नाविल्स पढ़ने की छुट्टी कभी नहीं दी। कहते हैं दिल उदास होती तो पढ़ लेता हूँ। पढ़ोगे, देखोगे तो जरूर वह बुद्धि को डिस्टर्ब करेगा। जब पहले जन्म से मर गये फिर वह पहली बातें क्यों याद करते, मरते क्यों नहीं? अच्छा।